International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 27-12-2020; Accepted: 15-01-2021; Published: 24-02-2021
www.hindijournal.com
Volume 7; Issue 1; 2021; Page No. 65-67

डॉ. महेन्द्र शर्मा 'सूर्य' के उपन्यासों में राष्ट्रीय चेतना

डॉ. जोगेश
सहायक प्रोफेसर हिन्दी, आई.बी. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, पानीपत, हरियाणा, भारत।

सारांश
हिन्दी साहित्य के मूर्धन्य साहित्यकार डॉ. महेन्द्र शर्मा 'सूर्य' ने गद्य एवं पद्य दोनों साहित्यिक विधाओं में अपनी लेखनी चलाई है। इनके लेखन में बहुधा उपन्यास, कहानियाँ, संस्मरण, निबन्ध, नाटक, सन्दर्भ, पुस्तकें एवं काव्य–गीत–गज़ल संग्रह, सतसई (दोहा–छन्द), खण्ड, काव्य प्रमुखतः हैं। मूलतः इनके उपन्यास एवं कथा–संग्रह देशभक्ति और भारतीय संस्कृति की भावना से ओत–प्रोत होते हैं। काव्य और गीत–संग्रहों में भी राष्ट्रीय–चेतना भावों का सागर उमड़ता हुआ दिखलाई पड़ता है। ये स्वयं भी देश–प्रेमी और स्वदेश संस्कृति के प्रति निष्ठावान होने के कारण अपनी बहुमूल्य–अभिव्यक्ति को बड़ी सहजता एवं सूक्ष्मता से प्रस्तुत कर जाते हैं।
देश भर में व्याप्त सभी ज्वलन्त समस्याओं के प्रति संघर्ष चेतना–भाव, उनका समुचित समाधान, साहसपूर्ण जूझने का भाव और राष्ट्रीयता की भावना इनके द्वारा रचित साहित्य में प्रचुर मात्रा में होती है। भ्रष्टाचार के खिलाफ भी ये खुलकर अपनी लेखनी चलाते हैं। जातिवाद और पूँजीवाद के विरुद्ध लेखनी चलाकर इन्होंने राष्ट्रीयता को ही सर्वोपरी दर्शाया है। भ्रष्ट राजनेताओं के विरुद्ध भी संघर्ष करने की भावना को अपने लेखन में अभिव्यक्त किया है। निष्कर्षतः सत्य है कि डॉ. महेन्द्र शर्मा 'सूर्य' द्वारा रचित साहित्य में राष्ट्रीय भावना और भारतीय संस्कृति–भावों का भरपूर लेखा–जोखा देखने को मिलता है।

मूलशब्द: डॉ. महेन्द्र शर्मा, सूर्य' के उपन्यासों, राष्ट्रीय चेतना

प्रस्तावना
डॉ. महेन्द्र शर्मा 'सूर्य' ने गद्य एवं पद्य दोनों में ही प्रचुर मात्रा में लिखा है। गद्य लेखन में इनके बहुधा उपन्यास, कहानियाँ, संस्मरण, निबन्ध, नाटक एवं सन्दर्भ पुस्तकें हैं तो पद्य में भी काव्य–गीत–गजल संग्रह, सतसई, खण्ड–काव्य इत्यादि अनेक विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई है। मूलतः इनके उपन्यास प्रायः सभी देशभक्ति से परिपूर्ण कथानक लिये होते हैं। उनमें देश में व्याप्त सभी समस्याओं के विरुद्ध समुचित समाधान, संघर्षों के प्रति साहस और राष्ट्रीयता की भावना से ओत–प्रोत रोचक एवं पठनीय साहित्य होता है। शोध की दृष्टी से इनके कुछेक प्रमुख उपन्यासों में रचित राष्ट्रीय चेतना के सन्दर्भ में डॉ. सुधांशु कुमार शुक्ला का निम्न कथन दृष्टव्य है–
"डॉ. महेन्द्र शर्मा 'सूर्य' के उपन्यासों में राष्ट्रीय भावना और भारतीय संस्कृति का लेखा–जोखा देखने को मिलता है। वे स्वयं देश–प्रेमी और संस्कृति के प्रति निष्ठावान होने के कारण अपनी अभिव्यक्ति को बड़ी सूक्ष्मता के साथ प्रस्तुत करते हैं।"[1]
डॉ. महेन्द्र शर्मा 'सूर्य' के उपन्यास 'टूटी चाह' में उपन्यास का नायक विकास राजनेताओं की बदनीयती को पहचान कर उन पर लगाम लगाने का भरसक प्रयत्न करता है। वह भ्रष्ट पुलिस अधिकारियों के खिलाफ भी खुलकर जंग लड़ने का ऐलान कर अपनी एक नई देशभक्त पार्टी का स्वयं निर्माण कर अपने देश में फैले तमाम आतंकवाद, भ्रष्टाचार और भ्रष्ट नेताओं को सबक सिखा कर ही मानता है किन्तु देश की राष्ट्रीयता पर तनिक भी आँच नहीं आने देता।
डॉ. स्नेहलता के अपने शब्दों में निम्न कथन यहाँ पर प्रस्तुत हैं–
"राजनेताओं की राजनीति न होकर बदनीति बनती जा रही है। विकास इस बदनीति को उखाड़ फैंकने की ललक रखता है, परन्तु असहाय महसूस करता है। संघर्ष जिसका मूल मंत्र, मातृभूमि जिसकी एकमात्र उपासना की देवी, भारतवासी भाई–भाई की भावना का पोषण करना चाहता है, इसलिये वह इन तीनों की रक्षा के लिये बड़े से बड़ा बलिदान देना भी सस्ता सौदा समझता है, यही विकास की सबसे बड़ी खूबी है।"[2]
'टूटी चाह' उपन्यास में नायक भ्रष्टाचार को खत्म करने का ध्येय रखते हुए विकास कहता है–
"आरम्भ में हम सरकार से किसी भी प्रकार के सहयोग की आशा नहीं कर सकते इसलिये हमें स्वतन्त्र रूप से अपनी एक अलग पार्टी 'स्वतन्त्रता सुरक्षा सेना' की स्थापना करके गुप्त रूप से ही कार्य आरम्भ कर देना चाहिये....। जातिवाद और पूँजीवाद फैलाने वालों का सफाया करने में सरकार की मदद करें।"[3]
इस प्रकार विकास आतंकवादियों के अड्डों को समाप्त करके देश में सुरक्षा एवं अमन चैन की स्थापना करता है।
'अरमानों की धूप–छाँह' उपन्यास तो राष्ट्रीय चेतना से लबालब भरा है। इस उपन्यास के नायक भानुप्रकाश का तो प्रथम दृश्य ही राष्ट्रीय चेतना से परिपूर्ण है–

"शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले
वतन पर मर मिटने वालों का बाकी नामो–निशां होगा।"[4]

उपन्यास 'अरमानों की धूप–छाँह' का नायक भानुप्रकाश एक ऐसा अमर नायक है जो देश की एकता और अखण्डता को बनाये रखने के लिये 'सुभाष पार्टी' का गठन करता है। इस पार्टी की सहायता से वह अपने अनूठे अभिनय कौशल के बल पर अपने तथा अपने पिता एवं परिवार के अरमान तो पूरे करता ही है साथ ही असली शेर दिल हीरो की तरह देश–द्रोहियों को भी अच्छा मजा चखाता है।
देश में अमीर लोग कानून की लचर व्यवस्था का फायदा उठा कर देश में स्मगलिंग, काला बाजारी और स्त्रियों का यौन शोषण करके उनकी खरीद–फरोख्त में संलिप्त रह कर देश–द्रोह कार्यों को अन्जाम देते हैं, उनको समुचित दण्ड दिलाने और इन तमाम बुराइयों को खत्म कराने में 'अरमानों की धूप–छाँह' का नायक भानू सरकार और कानून व्यवस्था का सहयोग करता है और राष्ट्रीय–चेतना का नव जन–जागरण देश वासियों के सामने प्रस्तुत करता है।
भानू ने इस उपन्यास में देश की राष्ट्रीय चेतना के सम्बन्ध में

स्वयं कहा है–

"माँ ने देश के लिए जीना सिखलाया....और उसने देश प्रेम की खातिर मरना जान लिया....संघर्ष मेरा प्रथम कर्त्तव्य है.... ।"[5]

'बदलती राहें' उपन्यास में तो डॉ. महेन्द्र शर्मा 'सूर्य' ने खुलकर देशप्रेम और राष्ट्रीयता का बिगुल बजाया है। देशप्रेम और देश भक्ति की नई अमली मिसालें कायम की हैं। इस उपन्यास का नायक मनोज एक युवा देश भक्त है और अपने कर्त्तव्यों के प्रति सदैव सजग रहता है। अपने कालेज की टूर–यात्रा के दौरान प्लेटफार्म पर भूखी अबला को देखता है तो कह उठता है–

"देश में फैली अराजकता, भुखमरी, बेरोजगारी, गरीबी सभी की मूल जड़ है जनसंख्या में तीव्र तर हो रही यह वृद्धि....देश में कायम रहेगी और बढ़ती रहेगी।"[6]

उपन्यास 'बदलती राहें' का नायक मनोज देश में फैली बुराइयों के प्रति अधिक संतृप्त रहता है। देश के नेताओं द्वारा भ्रष्ट प्रशासन नीति को वह इसका उत्तरदायी मानता है। वह ऐसी भ्रष्ट व्यवस्था को उखाड़ फैंकना चाहता है।

देखते–देखते देश–द्रोही कितनी आसानी से एक शरीफ नवयुवक मनोज को विलकी बना कर उसे स्मगलर बनने पर मजबूर कर डालते हैं, वह आज भूला नहीं है और एक दिन एक लड़के से प्रेरित होकर अपने इस दुर्भाग्यपूर्ण जीवन से मुक्ति पाने की ठान लेता है। लड़का जो कह रहा था, वह ध्यान से सुनता है।....

"भारत....मेरे देश! मुझे शक्ति दे ताकि मैं तेरे दुश्मनों को मार डालूँ....जो तुझसे गद्दारी करेगा मैं उसका मूँह तोड़ दूँगा.....मुझे शक्ति दे....मेरे भारत.... ।"[7]

उस समय मनोज खुद परिस्थितिवश स्मगलर बन कर देश विरोधी कार्यों की दलदल में फँसा हुआ था, ठीक उसी दौरान एक बच्चे के भूख से रोते शब्द सुनकर उसका जमीर फिर से जाग उठता है और वह मन ही मन पूरी तरह उस जिन्दगी में रह कर भी उस घिनौनी जिन्दगी को खत्म करके मात्र स्वयं को बदलकर ही नहीं, बल्कि अपने इर्द–गिर्द की स्मगलिंग गैंग को भी खत्म करने की ठान लेता है। और वह इस कार्य में सफल भी होता है। जग्गू उस्ताद और आर.रस्तोगी जैसे गुण्डों का सफाया करके देश–प्रेम को ही चुनता है। राष्ट्रीय–चेतना से भरपूर है उनका यह उपन्यास 'बदलती राहें'।

डॉ. महेन्द्र शर्मा 'सूर्य' का एक अन्य उपन्यास 'स्टोर्न हार्ट' भी राष्ट्रीय चेतना की शिक्षा देने वाला उपन्यास है। उपन्यासकार अपने उपन्यास 'स्टोन हार्ट' के नायक विकास को आरम्भ से ही भारती का एक सच्चा सपूत तथा राष्ट्र भक्त दर्शाता है। यह बचपन से लेकर यौवन तक स्वयं को सभी प्रकार की बुराईयों से दूर रखते हुए समाज तथा राष्ट्र के प्रति संवदेनशील रखता है।

वर्तमान समाज में अपने देश में घटते जीवन–मूल्यों तथा सरकारों के पतन की ओर इंगित करके कह उठता है–

"कितना पतन हो चुका है राम और कृष्ण के इस देश भारत का... .? जिस देश को आज बहादुर नौजवान सिपाहियों की जरूरत है वहाँ की जनता हीजड़ों तथा नतर्क–नर्तकियों की बेहूदी सेना इकट्ठी कर रही है.... ।"[8]

इस उपन्यास में उपन्यास के इस पात्र में उपन्यासकार डॉ. महेन्द्र शर्मा सूर्य ने एक ऐसे आदर्श पात्र की कल्पना को साकार किया है जो स्वभाव से सन्यासी नजर आता है। कर्मठता में पूरा देशभक्त साबित होता है और संचेतना रूप में वह लाखों, करोड़ों लोगों और देश–भक्तों की भावना को झिंझोड़ डालने में समर्थ है।

उपन्यास का यह पात्र पूरी तरह देश पर मर मिटने को तैयार होता है। वह हैरान है कि उसके देश भारत में जहाँ आज बहादुर जवानों और जाँबाज सिपाहियों की दरकार है वहीं पर वर्तमान में अनावश्यक रूप से बढ़ रही हीजड़ों और नर्तक–नर्तकियों की सेना की कोई आवश्यकता नहीं है।

उपन्यास 'स्टोन हार्ट' में वह कानून के दुश्मनों को देश के कानून के हवाले करके अपने देश के प्रति अपना एक सच्चा सिपाही होने का फर्ज अदा करता है। देश सेवा का वह जज्बा सदैव वंदनीय है।

उपन्यास 'टूटी चाह' का नायक विकास पूर्ण–रूपेण देश भक्त एवं राष्ट्र के प्रति सदैव समर्पित युवक है, जो मेजर काका को अपना आदर्श मानकर उनकी कल्पना को साकार रूप देता है और अपने देश की स्वतन्त्रता एवं सम्प्रभुता को सदैव बचाये रखने में सफल होता है। वह मेजर काका को देश के प्रति अपना सम्पूर्ण भाव इस प्रकार व्यक्त करता है–

"मैं यह लड़ाई हर कीमत पर लडूँगा मेजर काका, चाहे मुझे रक्त का एक–एक कतरा क्यों न बहाना पड़े....मैं आपके चरणों की सौगन्ध खाकर ऐलान करता हूँ काका– अपने देश के लिए मैं अपने प्राणों तक की आहुति देने के लिए हमेशा तैयार रहूँगा....मुझे आशीर्वाद दो काका, अपने मकसद में मैं सफल हो सकूँ.... ।"[9]

अपनी मातृभूमि के प्रति इतना अपार स्नेह देखकर मेजर काका की आँखें डबडबा आईं, गला अवरुद्ध हो गया और मुख से कोई शब्द न निकला।

'टूटी चाह' का नायक विकास पूरी तरह मातृभूमि के प्रति समर्पित है। वह प्राण तक देकर भी अपनी मातृभूमि की सदैव रक्षा करना चाहता है। वह किसी भी कीमत पर देश में गद्दारों की उपस्थिति बर्दाश्त नहीं कर सकता है और सदैव प्रत्येक देशवासी को अपनी मातृभूमि के प्रति समर्पित भाव रखने की प्रेरणा देता रहता है।

निष्कर्ष

डॉ. महेन्द्र शर्मा सूर्य के अधिकांश उपन्यासों में सदैव संस्कृति निहित राष्ट्रीय चेतना, स्वदेश प्रेम तथा राष्ट्रीय चेतना के प्रखर स्वर, आकर्षक कथांश, देश–प्रेम और राष्ट्र–प्रेम किसी ज्वार की भांति उफनता रहा है। इनके उपन्यासों के मुख्य पात्र अपने देश पर सब कुछ न्यौछावर करने को सदैव तैयार रहते हैं।

डॉ. सुधांशु कुमार शुक्ला जी के निम्न शब्द यहाँ इस बात का सटीक उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। वे अपनी समीक्षा– पुस्तक– उपन्यासकार डॉ. महेन्द्र शर्मा 'सूर्य' मेरी तथा उनकी नजर में सही लिखते हैं–

"डॉ. महेन्द्र शर्मा 'सूर्य' के उपन्यासों में राष्ट्रीय भावना और भारतीय संस्कृति का लेखा–जोखा देखने को मिलता है। वे स्वयं देश–प्रेमी और संस्कृति के प्रति निष्ठावान होने के कारण अपनी अभिव्यक्ति को बड़ी सुक्ष्मता के साथ प्रस्तुत करते हैं।"[10]

डॉ. महेन्द्र शर्मा 'सूर्य' के उपन्यासों में देश प्रेम की गंगा सदैव प्रवाहित होती रहती है। इनके उपन्यासों के सभी कथा–पात्र स्वदेश–प्रेम का जज्बा लेकर चलते हैं। समाज में फैली आधुनिक कुरीतियों, अंध–विश्वासों तथा भ्रष्टाचार के प्रति सदैव समाज को सचेत करने के लिए, इन कुरीतियों को समाप्त करने के लिए प्रेरित किया हे। उपन्यासों के कथा–प्रसंगों को देश–प्रेम हित दर्शाया गया है। भ्रष्ट राजनेताओं और अफसरों को सदैव कानून के हवाले करके उचित सजा के लिए प्रेरणादायक कहानी तंत्र का समावेश किया गया है। सभी उपन्यासों का कथा–सार भरपूर राष्ट्रीय चेतना के भावों से भरा हुआ है। स्वदेश प्रेम और मातृभूमि की सेवार्थ इनके उपन्यासों के कथा पात्र सदैव अपने प्राणों तक की आहुतियाँ देकर भी सब कुछ न्यौछावर करने को तत्पर रहते हैं। विभिन्न शोध–पुस्तकों में इस सम्बन्ध में कई विद्वानों ने बहुत कुछ लिखा भी है।

अतः स्पष्टतः कहा जा सकता है कि उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखकर यह सत्य है कि डॉ. महेन्द्र शर्मा 'सूर्य' के सभी उपन्यासों में राष्ट्रीय–चेतना भाव सर्वोपरी पाये जाते हैं। यह भी कहा जा सकता है कि इनके उपन्यासों का कथा सार एवं पात्र–संसार देश–भक्ति और राष्ट्रीय चेतना के चिंतन–भावों से परिपूर्ण हैं।

सन्दर्भ सूची

1. राष्ट्र प्रेम की अभिव्यक्ति/स्टोन हार्ट/पृष्ठ संख्या–14
2. उपन्यासकार डॉ. महेन्द्र शर्मा 'सूर्य' मेरी और उनकी दृष्टि में/पृष्ठ संख्या–48
3. डॉ. महेन्द्र शर्मा 'सूर्य'/टूटी चाह/पृष्ठ संख्या–136
4. डॉ. महेन्द्र शर्मा 'सूर्य'/अरमानों की धूप–छाँह'/पृष्ठ संख्या–9
5. डॉ. महेन्द्र शर्मा 'सूर्य'/अरमानों की धूप–छाँह'/पृष्ठ संख्या–84
6. डॉ. महेन्द्र शर्मा 'सूर्य'/बदलती राहें/पृष्ठ संख्या–14
7. डॉ. महेन्द्र शर्मा 'सूर्य'/बदलती राहें/पृष्ठ संख्या–33
8. डॉ. महेन्द्र शर्मा 'सूर्य'/स्टोन हार्ट/पृष्ठ संख्या–6
9. डॉ. महेन्द्र शर्मा 'सूर्य'/टूटी चाह/पृष्ठ संख्या–52
10. डॉ. सुधांशु कुमार शुक्ला/उपन्यासकार डॉ. महेन्द्र शर्मा 'सूर्य' मेरी तथा उनकी नजर में/पृष्ठ संख्या–14